शोध-प्रारूप

नागपुरी साहित्यकार शकुन्तला मिश्र जीवन एवं साहित्य: एक अध्ययन

पीएच. डी. हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय,

राँची विश्वविद्यालय, राँची।

वर्ष - 2024

शोध निर्देशक

डाॅ. उमेश नन्द तिवारी
सहायक प्राध्यापक
नागपुरी भाषा विभाग
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधकत्र्ता

तबरेज मंसुरी
एम.ए. (नागपुरी)
यू.जी.सी. नेट/एन.एफ.ओ.बी.सी.
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
डाॅ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची।

प्रस्तावना

झारखण्ड प्रदेश जो प्राचीन काल से दक्षिणारण्य का उत्तर पूर्वी भाग है। यह अनेक नामों से जाना जाता रहा है। जिनमें प्रमुख नाम हैं- अर्कखंड, कर्कखंड, खुखरा, कोकराह, नागदेश, नागदिशुम, हीरानागपुर, सुतियागढ़, चुटियानागपुर, छोटानागपुर आदि। भौगोलिक दृष्टि से तो यह विलक्षण और अद्वितीय है ही भाषा साहित्य व संस्कृति की दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध रहा है। आज यह प्रदेश झारखण्ड के नाम से देश के 28 वें राज्य के रूप में जाना जाता है।

झारखण्ड एक ऐसा राज्य है जहाँ प्रमुख रूप से आर्य, द्रविड़ और आग्नेय तीन भाषा परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। झारखण्ड में 32 प्रकार की जनजातियां तथा एक बड़ा वर्ग सदानों का है जिनका कुल-मूल एकमेव हो गया है। सदान वर्ग द्वारा बोली जानेवाली भाषाओं में चार क्षेत्रीय भाषाएं हैं - नागपुरी, खोरठा, कुरमाली तथा पंचपरगनिया। इनमें नागपुरी सबसे लोकप्रिय एवं सर्वमान्य भाषा रही है। इसका कारण है छोटानागपुर क्षेत्र में लगभग 2000 वर्षों तक नागवंशी शासन काल में राजभाषा के रूप में नागपुरी भाषा प्रश्रय पाती रही है।

नागपुरी सबसे प्राचीन भाषा है। इसका सबूत है नागवंश के 50 वें राजा रघुनाथ नृपति (शासन काल 1626 ई. से 1668 ई.). का प्राप्त नागपुरी गीत । उनके द्वारा नागपुरी में रची गई रचना प्राप्त होती है। इस तरह नागपुरी शिष्ट साहित्य का ज्ञात काल लगभग 400 वर्षों से अधिक का है। तब से अब तक निरंतर नागपुरी शिष्ट साहित्य का विकास होता रहा है।

छोटानागपुर का पठार प्राचीनतम भू-भाग में से एक है तो नागपुरी लोक साहित्य की परम्परा भी विराट और प्राचीन है। प्राचीन काल से ही लोक साहित्य की धारा प्रवाहित होती रही है। नागपुरी लोककथा, लोकगीत मुहावरे, कहावतें, पहेली इत्यादि प्रचुर मात्रा में प्राप्त होते हैं। हर गांव में एक अखरा होना भी यह दर्शाता है कि इस क्षेत्र के लोग प्रारम्भ से ही गीत-संगीत, नृत्य में माहिर रहे हैं और गीत-संगीत उनके जीवन के अंग रहे हैं। आज झारखण्ड के ही नहीं कई राज्यों के निवासियों द्वारा नागपुरी लोकसंगीत बहुत ही चाव के साथ गाया एवं सुना जाता है। झारखण्ड की 32 जनजातियों में आठ जनजाति को आदिम जनजाति कहा जाता है। इनमें असुर, बिरहोर, बिरजिया,

कोरबा, माल पहाड़िया, परहिया, सौरिया पहाड़िया, सबर आदि हैं। इनमें से कुछ आदिम जनजातियों की अपनी भाषा थी किंतु अब वह विलुप्ति के कगार पर है। शेष जनजातियों में से पांच जनजाति उरांव, मुंडा, हो, संथाल, खड़िया की अपनी भाषा है। किंतु शेष जनजातियाँ आदिम जनजातियों की तरह ही क्षेत्रीय भाषा का इस्तेमाल करती हैं। इनमें इस क्षेत्र की बहुत बड़ी आबादी वह है जो नागपुरी भाषा का प्रयोग करती है।

नागपुरी भाषा को पूर्व में कई नामों से पुकारा जाता रहा था जिनमें प्रमुख हैं - सदानी, सदरी, सादरी, नागपुरिया, नागपुरी, गँवारी, गँउली आदि। इनमें नागपुरी नाम अब मानक नाम का रूप ले लिया है।

नागपुरी नाम सर्वाधिक लोकप्रिय, प्रचलित और उपयुक्त है। स्थानीय जन समुदाय के अतिरिक्त सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन, डॉ. उदय नारायण तिवारी, जयचंद्र विद्यालंकर, पंडित बलदेव उपाध्याय, प्रोफेसर केसरी कुमार आदि विद्वानों ने इस नाम को पसंद और प्रयुक्त किया है।'1

नागपुरी आर्य भाषा परिवार की भाषा है। नागपुरी के शोधकर्ताओं ने इसके सम्बन्ध में अपने-अपने विचार व्यक्त किए हैं - ''नागपुरी आर्य भाषा परिवार की भाषा है। प्राचीन नागवंशी राजाओं ने इसे राजभाषा का स्थान दिया था। अन्य झारखण्डी भाषाओं की अपेक्षा इसके गीत साहित्य अधिक सम्पन्न हैं किंतु इसका सही मूल्यांकन नहीं हुआ है। यह अभिशापित शकुंतला की तरह बनी रही।2

---

1. नागपुरी गीतों में श्रृंगार रस - डाॅ. विशेष्वर प्रसाद केसरी पृष्ठ सं. 13)

2. डॉ. विशेष्वर प्रसाद केसरी, नागपुरी भाषा और साहित्य, भूमिका 1971)

शोध विषय की प्रेरणा:-

नागपुरी मेरी मातृभाषा रही है। नागपुरी भाषा मेरे रग-रग में रची-बसी है। बचपन से ही मैं नागपुरी भाषा बोलता एवं सुनता आया हूँ । क्योंकि मेरे घर में सभी नागपुरी ही बोलते हैं। जिसके कारण मैं नागपुरी का और नागपुरी भाषा मेरी हो गई ऐसा लगता है। करमा, जितिया पर्व से लेकर शादी-विवाह के अवसरों पर गाए जाने वाले नागपुरी गीत मुझे हमेशा से अपनी और खींचते रहे हैं। मेरे पिताजी पद्मश्री मधु मंसुरी 'हँसमुख' हमेशा भाषा साहित्य के विचार-विमर्ष के लिए शकुन्तला मिश्र जी के यहाँ जाया करते थे। कभी-कभी पिताजी के कहने पर मैं उन्हें लेकर शकुन्तला मिश्र जी के यहाँ जाया करता था। वहाँ जाने के बाद मेरा हृदय नागपुरी में तिरोहित हो जाया करता था। मेरे पिताजी बतलाते थे कि शकुन्तला मिश्र जी के पिताजी स्व. जगेष्वर मिश्र एक अच्छे मांदर वादक थे। तब मुझे लगता था कहीं न कहीं इन पर अपने पिता की छाप या असर तो नहीं पड़ा है क्योंकि मेरे पिताजी के कलाकार होने का मुझे गर्व ही नहीं प्रभाव भी पड़ने लगा था। मैं बगल में बैठकर सारी बातें सुनता था। मुझे भी लगता था कि काष मैं भी नागपुरीमय हो पाता।

घर में भी नागपुरी की कुछ पुस्तकें थी जिनमें मैं नागपुरी कहानी संकलन ‘काँटी पढ़ चुका था। उसकी तीन कहानियाँ काँटी, रद्दी कागज, और परदेसी बेटा मेरे अंतर्मन में समा चुकी थी। इस तरह नागपुरी किताब पढ़ना और पिताजी के पास नईमुद्दीन मिरदाहा, डाॅ. विसेष्वर प्रसाद केषरी, डाॅ. कुमारी बासंती, महावीर नायक, डाॅ. गिरिधारी राम गौंझू, डाॅ.कृष्ण कलाधर जैसे कई नागपुरी के जाने-माने साहित्यकारों का आना-जाना, नागपुरी में बातचीत करना नागपुरी भाषा के प्रति मेरी श्रद्धा को बढ़ाने लगा।

पिताजी शकुन्तला मिश्र जी के यहाँ जाते थे उस समय मैं बी.ए. में पढ़ाई करता था। पहली बार जब मैं इनसे मिला तब मेरे पिताजी ने ही इनके बारे बहुत-सी जानकारी दी। उनकी कहानी परदेसी बेटा ने तो मेरे हृदय को अंतःस्थल तक झकझोर ही डाला था जब मैंने उनकी एक और कहानी किताब बनकेवरा भाग-1 में छपी कहानी ‘‘नीम तीता’ ’ को पढ़ा तो इन्हें जानने की, इनकी कहानियों को पढ़ने की मेरी उत्कंठ इच्छा और बलवती होती चली गई। मैं इनके घर में रखे नागपुरी साहित्य के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु सरकार एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्राप्त सम्मानों एवं प्रषस्ति-पत्रों को देखता तो मेरा मन नागपुरी और शकुन्तला मिश्र की ओर स्वतः खींचा चला जाता। अपनी नागपुरी प्रेम के कारण ही मैंने डाॅ. ष्यामा प्रसाद मुखर्जी विष्वविद्यालय राँची से वर्ष 2021 में नागपुरी में एम. ए. में नामांकन करा लिया और प्रथम श्रेणी से उतीर्ण भी हो गया। इस दौरान मैं नागपुरी की अनेक कहानियों को पढ़ने का अवसर मिला।

एक दिन पिताजी मुझे महाकवि घासी राम की जयन्ती पर करकट चान्हों ले गए थे कार्यक्रम में शकुन्तला मिश्र की कार्यशैली एवं उनके साहित्यिक गतिविधियों को देखने का मुझे नजदीक से अवसर मिला तब से मैं उनकी हर साहित्यिक गतिविधियों में और नागपुरी संस्थाओं के हर कार्यक्रम में सामिल होने लगा। इस सभी कार्यक्रमों के माध्यम से मै जैसे-जैसे

उनको जानता गया उनकी विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक, संास्कृतिक गतिविधियों से भी वाकिफ होता गया।

मैंने उनके बारे में जानकारी हासिल की तो पाया कि गुमला जिला के दूरस्थ ग्रामीण इलाका कदमटोली, गुमला में 1 मई 1962 ई. को सदान परिवार में शकुन्तला मिश्र का जन्म हुआ। उनके पिता का नाम स्व. जगेश्वर मिश्र तथा उनकी माता का नाम जगतारिणी देवी है। उनके दादाजी स्व. हरिनंदन मिश्र की गिनती गुमला जिला के बड़े जमींदारों में की जाती थी। इसी सदान परिवार में जन्म लेने वाली शकुन्तला जी अपनी हिम्मत और मेहनत के बदौलत आज नागपुरी साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी हैं। वे आज जिस मुकाम तक पहुँच पाई हैं वह निश्चित रूप से प्रेरणादायक है। उनके द्वारा लिखित, संकलित, संपादित पुस्तकें आठवें वर्ग से लेकर एम.ए. तथा मैट्रीक, इंटरमीडिएट, स्नातक स्तर से लेकर जेपीएससी तक के प्रतियोगिता परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल हैं।

उन्होंने मुझे भी साहित्य लेखन हेतु प्रेरित किया। अपने संपादन में प्रकाशित नागपुरी पत्रिका ‘‘नागपुरी पझरा में उन्होंने मेरी रचनाओं को भी स्थान देकर मेरा प्रोत्साहन बढ़ाया। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। उनके रोम-रोम में झारखण्ड की भाषा साहित्य एवं संस्कृति समाहित है। आधुनिक नागपुरी साहित्य का लेखन, संपादन एवं प्रकाशन के क्षेत्र में उनका योगदान असाधारण है। उन्होंने नागपुरी भाषा साहित्य को पुष्पित एवं पल्लवित करने में अपना तन-मन-धन न्योछावर कर दिया है। मैं उनके साहित्य-साधना का कायल हो गया। मैंने सोच लिया था कि यदि मुझे शोध करने का अवसर मिला तो मैं उनके जीवन और साहित्य पर शोध करूंगा।

आधुनिक नागपुरी साहित्यकारों में धनीराम बक्शी, प्रफुल्ल कुमार राय, पीटर शांति नवरंगी, आचार्य मृत्युंजय नाथ शर्मा, सहनी उपेंद्र पाल नहन, डॉ. विसेष्वर प्रसाद केशरी, शिव अवतार चैधरी शिवाजी, पद्मश्री डॉ. गिरिधारी राम गौंझू, डॉ. सुरेश चंद्र राय, डॉ. सविता

केशरी, डॉ. उमेश नंद तिवारी आदि के साथ नागपुरी साहित्य को संवर्द्धित करने वालों में शकुन्तला मिश्र का नाम भी निःसंदेह प्रमुखता के साथ लिया जा सकता है। उन्होंने साहित्य सृजन ही नहीं किया पूरे देश के नागपुरी सेविओं को एक सूत्र में बांधने का प्रयास भी किया है। साहित्य के साथ-साथ नागपुरी के पारंपरिक संगीत को भी संरक्षित करने में उनका विशेष योगदान है। शकुन्तला मिश्र के उपन्यास से प्रभावित होकर अंगरेजी विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष डा ॅ. किरण मिश्र ने अंगरेजी में अनुवाद किया और यह जल्द ही प्रकाषित होनेवाला है। मैं हर्षित हूँ और अपने आप को सौभाग्यशाली समझता हूँ कि उन्होंने अपने जीवन एवं साहित्य पर शोध करने की सहमति मुझे प्रदान की है।

शोध विषय का औचित्य:-

किसी भी शोध कार्य का महत्व तब तक नहीं होता जब तक कि उसकी उपयोगिता समाज, प्रदेष एवं देष के लिए न हो। शकुन्तला मिश्र ने झारखण्ड में तो अपनी पहचान बनाई ही हैं भारत की सौ विदुषि महिलाओं में से एक के रूप में सम्मान प्राप्त कर अपने राज्य का भी सम्मान बढ़ाया है। एक प्रेरक व्यक्तित्व पर काम करना निःसंदेह औचित्यपूर्ण कार्य साबित होगा। उनके जीवन एवं साहित्य का अध्ययन करने से एक ऐसे व्यक्तित्व का कृतित्व प्रकाश में आयगा जो महिला सशक्तिकरण का अनुपम उदाहरण के रूप में जनमानस के सामने आयगा।

अतः इस शोध प्रबंध का उद्देश्य होगा:-

1. नागपुरी साहित्य का गहन अध्ययन करना।

2. नागपुरी साहित्य को महत्व एवं उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना साथ ही इनके संकलन, संचयन एवं मूल्यांकन की दिषाएँ प्रषस्त करना।

3. नागपुरी साहित्य के मूर्द्धन्य साहित्यकार षकुन्तला मिश्र जी के जीवन एवं साहित्य के माध्यम से झारखण्डी जनजीवन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाष डालना ।

4. नागपुरी भाषा साहित्य को सुद्दढ़ करना।

5. झारखण्ड के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास में योगदान देना।

शोध का महत्व:-

‘ ‘ नागपुरी साहित्यकार शकुन्तला मिश्र जीवन एवं साहित्य: एक अध्ययन’ ’

शोध से समाज में निम्नलिखित प्रभाव पड़ेगा -

1. इस शोध प्रबंध के प्रकाष में आने से समस्त नागपुरी भाषा-भाषियों एवं समाज में कवि कलाकारों और साहित्यकारों के प्रति सम्मान बढ़ेगा और जागृति की लहर आयगी।
2. इसके समकालीन नागपुरी भाषा-भाषियों को साहित्य समीक्षा पर शोध के लिए आदर्ष साबित होगा।
3. निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रुझान बढ़ेगा एवं एक नयी जागृत्ति उत्पन्न होगी।
4. अन्य झारखण्डी भाषाओं में शोध हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।
5. साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र के लिए लाभकारी होगा।

6. इस शोध कार्य से भावी पीढ़ी के महिला रचनाकारों का मनोबल बढ़ेगा एवं लेखन के प्रति झुकाव होगा।

शोध प्रविधिः-

प्रस्तावित शोध प्रबंध के अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध विधियों का अनुषरण किया जाएगा -

1. अवलोकन विधि
2. साक्षात्कार विधि
3. अनुसूची विधि
4. विष्लेषणात्मक अध्ययन
5. प्रष्नावली विधि
6. मूल्यांकन।

पीएच॰ डी॰ शोध-प्रबंध की प्रस्तावित रुप-रेखा

शोध विषय:- नागपुरी साहित्यकार शकुन्तला मिश्र जीवन एवं साहित्य: एक अध्ययन

प्रस्तावना

शोध-विषय की प्रेरणा

औचित्य

महत्व

शोध की विषय-सीमा

शोध विधि

विषय से सम्बन्धित पूर्व में किए गए शोध कार्यों का विवरण

प्रथम अध्याय:-

शकुन्तला मिश्र जी की जीवन रेखाएँ-

क. जन्म एवं बचपन

ख. पारिवारिक पृष्ठभूमि

ग. बाल्यावस्था

घ. शिक्षा

ङ किशोरावस्था

च. यौवनावस्था

छ. व्यवसाय

द्वितीय अध्यायः-

शकुन्तला मिश्र की वैयक्तिक विशेषताएँ -

1. बाह्य विशेषताएँ

    क. समय की पाबंद

    ख. आतिथ्य सत्कार में माहिर

    ग. अच्छे वस्त्राभूषण के शौकीन

    घ. कुषल गृहणी

2. आन्तरिक विशेषताएँ

    क. स्वाभिमानी व निडर

    ख. दृढ़ निश्चयी

    ग. संवेदनषील व विनम्र

    घ. अध्ययनशील

    ङ. न्यायप्रिय व कत्र्तव्य-परायण

    च. धार्मिक आचरण

    छ. सहिष्णु व उदार हृदय

    ज. प्रकृति प्रेमी

    झ. संगीत के प्रति रूझान

तृतीय अध्ययन:-

शकुन्तला मिश्र की समकालीन परिस्थितियाँ

क. पारिवारिक पृष्ठभूमि

ख. सामाजिक पृष्ठभूमि

ग. आर्थिक पृष्ठभूमि

घ. राजनीतिक पृष्ठभूमि

ङ. साहित्यिक पृष्ठभूमि

चतुर्थ अध्यायः-

शकुन्तला मिश्र का साहित्य सृजन

1. नागपुरी शब्दकोष निर्माण में योगदान
2. नागपुरी व्याकरण निर्माण में योगदान
3. नागपुरी पद्य साहित्य के विकास में योगदान
4. नागपुरी गद्य साहित्य के विकास में योगदान

    क. कहानी

    ख. नाटक

    ग. निबंध

    घ. उपन्यास

    ङ. समीक्षा

    च. अनुवाद

    छ. अन्य

पंचम अध्याय:-

शकुन्तला मिश्र की रचनागत प्रवृत्तियाँ एवं रचना वैषिष्ट्य

1. रचनागत प्रवृत्तियाँ

   क. नारी शक्ति अस्मिता बोध

   ख. प्रकृति, जल आदि संरक्षण

   ग. एकता, भाई-चारा, विषम सामाजिक परिस्थिति का चित्रण

2. रचना वैषिष्ट्य

   क. काव्य भाषा

   ख. बिम्ब विधान

   ग. अलंकार विधान

   घ. रस विधान

   ङ. छंद विधान

   च. काव्य गुण

षष्ठ अध्याय:-

शकुन्तला मिश्र का नागपुरी साहित्य के संकलन, संपादन एवं प्रकाषन   में योगदान

1. लोक साहित्य संकलन
   - क. लोकगीत संकलन
   - ख. लोककथा संकलन
   - ग. प्रकीर्ण साहित्य संकलन
2. नागपुरी षिष्ट साहित्य के संकलन व संपादन में योगदान
   - क. गीत-कविता संकलन
   - ख. कहानी संकलन
   - ग. निबंध संकलन
   - घ. नाटक संकलन
3. नागपुरी और जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं के पुस्तकों की प्रकाषिका के रूप में योगदान
4. हिन्दी व नागपुरी पत्र-पत्रिकाओं की संपादिका के रूप में योगदान
5. नागपुरी संस्थाओं के माध्यम से नागपुरी भाषा, साहित्य व संगीत को संरक्षित रखने में योगदान

सप्तम अध्याय:-

शकुन्तला मिश्र जी का आकाषवाणी राँची के माध्यम से नागपुरी साहित्य के विकास में योगदान

क. हिन्दी-नागपुरी सूत्रधार/ उद्घोषिका के रुप में

ख. नाटक लेखन, कलाकार एवं प्रस्तुतकर्ता के रुप में

ग. लोकगीतों का ध्वन्यांकन एवं सम्पूर्ण झारखण्उ में प्रसारित होनेवाले लोकगीतों पर आधारित कार्यक्रम 'गूंजे झारखण्ड' का आलेख लेखन एवं प्रस्तुतकर्ता के रूप में

घ. नागपुरी लोककथाओं पर आधारित रेडियो कार्यक्रम 'सुनो कहानी' प्रस्तुतकत्र्ता के रूप में

ङ. रेडियो द्वारा प्रसारित नागपुरी-हिन्दी कविता, कहानी, वात्र्ता / भेंटवात्र्ता के माध्यम से

च. झारखण्ड के विभिन्न जिलों में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में रंगमंच संचालन एवं वक्ता के रूप में

छ. रेडियो बाह्य ध्वन्यांकन के माध्यम से

ज. नागपुरी समाचार प्रवाचिका के रुप में।

झ. आकाशवाणी के विभिन्न कार्यक्रमों में सूत्रधार, उद्घोषिका एवं प्रस्तोता के रूप में

निष्कर्षः-

1. परिशिष्ट

(क) आधार ग्रंथों की सूची

(ख) संदर्भ ग्रंथों की सूची

(ग) साक्षात्कार की सूची

(घ) चित्रावली

(ङ) पत्र-पत्रिकाओं की सूची

नोट :- शोध प्रारुप में आवश्यकता होने पर आंषिक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

शोध निर्देशक

डाॅ. उमेश नन्द तिवारी
सहायक प्राध्यापक
नागपुरी भाषा विभाग
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधकत्र्ता

तबरेज मंसुरी
एम.ए. (नागपुरी)
यू.जी.सी. नेट/एन.एफ.ओ.बी.सी.
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
डाॅ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची।

आधार ग्रंथों की सूचीः-

क्र. सं.	लेखक	पुस्तक	प्रकाषक	प्रकाषन वर्ष
1	’केशरी, डाॅ॰ विसेष्वर प्रसाद	नागपुरी कवि और उनका काव्य	नागपुरी संस्थान पिठोेरिया	2014
2	’कुमार, डाॅ॰ राम	श्री गोबिन्द शरण लोहराः व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा, राँची	2021
3	’केषरी’ डाॅ॰ सविता	नागपुरी कवि कंचनः जीवन एवं साहित्य	नागपुरी संस्थान पिठोरिया, राँची	2015
4	’गिरिराज, डाॅ॰ गिरिधारी राम गौंझू	पीटर शांति नवरंगीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व,	झारखण्ड झरोखा, राँची	2014
5	’तिवारी, डाॅ॰ उमेष नन्द	आधुनिक नागपुरी, साहित्य (संदर्भ -प्रफुल्ल कुमार रायः एक मूल्यांकन)	झारखण्ड झरोखा, राँची	2005
6.	साहु, डाॅ॰ सुखदेव	डाॅ॰ भुवनेष्वर ‘अनुज’ ः व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा, राँची	2020 ‘
7.	मिश्रा, डाॅ॰ अनुपमा	सहनी उपेन्द्र पाल ‘नहन’ : जीवन एवं साहित्य	झारखण्ड झरोखा, राँची	2018
8.	’दुबे, डाॅ॰ विश्वनाथ	धनीराम बक्शी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	शोध प्रबंध, अप्रकाषित	1981
9.	‘मिश्र’ डाॅ॰ शकुन्तला	टोंगरी आउर पझरा भाग-1	झारखण्ड झरोखा, राँची	2007
10.	‘मिश्र डाॅ॰ शकुन्तला	टोंगरी आउर पझरा भाग-2	झारखण्ड झरोखा, राँची	2007
11.	‘मिश्र डाॅ॰ शकुन्तला	बनफूल भाग-1	झारखण्ड झरोखा, राँची	2008
12.	‘मिश्र’ डाॅ॰ शकुन्तला	बनफूल भाग-2	झारखण्ड झरोखा, राँची	2008
13.	‘मिश्र’ डाॅ॰ शकुन्तला	रस मंजरी	झारखण्ड झरोखा, राँची	2010

14. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी(सदानी)व्याकरण	झारखण्ड झरोखा, राँची	2010
15. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	मंजरभाग-2	झारखण्ड झरोखा, राँची	2010
16. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	सदानी नागपुरी-हिन्दी शब्दकोष	झारखण्ड झरोखा, राँची	2011
17. 'मिश्र डाॅ॰ शकुन्तला	अंगना	झारखण्ड झरोखा, राँची	2012
18. 'मिश्र डाॅ॰ शकुन्तला	एक चकता रउद	झारखण्ड झरोखा, राँची	2012
19. 'मिश्र डाॅ॰ शकुन्तला	बनकेवरा भाग-1	झारखण्ड झरोखा, राँची	2012
20. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	बनकेवरा भाग-2	झारखण्ड झरोखा, राँची	2012
21.'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	मंजर भाग-1	झारखण्ड झरोखा, राँची	2012
22. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	लवका	झारखण्ड झरोखा, राँची	2012
23. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी के प्राचीन कवि	झारखण्ड झरोखा, राँची	2012
24. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी लोकसाहित्य गोछा	झारखण्ड झरोखा, राँची	2012
25. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तल	नागपुरी गद तइरगन आउर कोरी भइर पझरा	झारखण्ड झरोखा, राँची	2013
26. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	रिमझिम	झारखण्ड झरोखा, राँची	2013
27. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	रूगड़ा-खुखड़ी	झारखण्ड झरोखा, राँची	2013
28. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	झिकोर	झारखण्ड झरोखा, राँची	2013
29. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	सहनाई	झारखण्ड झरोखा, राँची	2014
30. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	झारखण्ड की पारंपरिक कलाएँ	झारखण्ड झरोखा, राँची	2015
31. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी दर्पण	झारखण्ड झरोखा, राँची	2017
32. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	सातो नदी पार	झारखण्ड झरोखा, राँची	2017
33. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी रस अलंकार	झारखण्ड झरोखा, राँची	2019
34. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी प्रकीर्ण साहित्य	झारखण्ड झरोखा, राँची	2020
35. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	झारखण्ड झरोखा, राँची	2023

36. मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी भाषा का सामान्य परिचय	झारखण्ड झरोखा, राँची	2024
37. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी पझरा	झारखण्ड झरोखा, राँची	2018
38. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी पझरा	झारखण्ड झरोखा, राँची	2020
39. 'मिश्र' डाॅ॰ शकुन्तला	नागपुरी पझरा	झारखण्ड झरोखा, राँची	2022
40. 'मुर्मू डाॅ॰ दुखिया	रघुनाथ टुडूः व्यक्तित्व एवं कृतित्व	प्यारा केरकेट्टा फाउंडेषन चेषायर होमरोड, बरियातू राँची	1981
41.'साहु डाॅ॰ गोविन्द	नागपुरी कवि घासी राम, व्यक्तित्व और कृतित्व	शोध प्रबंध, अप्रकाषित	1976
42.'साहु, डाॅ॰ सुखदेव	डाॅ॰ भुवनेष्वर अनुजः व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा, राँची	2021
43.साहु, डाॅ॰ अंजु कुमारी	नागपुरी एवं हिन्दी काः रूप वैज्ञानिक अध्ययन	झारखण्ड झरोखा, राँची	2021

संदर्भ ग्रंथों की सूचीः-

क्र.सं.	लेखक	पुस्तक	प्रकाषक	प्रकाषन वर्ष
1	’अग्रवाल, डाॅ॰ सुरेष	भारतीय काव्यषास्त्र, के सिद्धांत	अषोक प्रकाषन नई सड़क दिल्ली	2009
2	’अनुज, डाॅ॰ भुवनेष्वर	नागपुरी लोक साहित्य	झारखण्ड झरोखा	
3	’इन्द्र, डाॅ॰ इन्द्रपाल सिंह	साहित्य चिन्तन	वागीश्वरी प्रकाशक, आगरा, नागपुर	1990
4	’उपाध्याय’ , डाॅ॰ कृष्णदेव	लोक साहित्य की भूमिका	साहित्य भवन, प्रा0 लि0 इलाहाबाद	2008
5	’श्रीवास्तव, डाॅ॰ अर्चना	भारतीय तथा पाष्चात्य काव्यषास्त्र	विष्वविद्यालय प्रकाषन, वाराणसी	2015
6	’केषरी’ , डाॅ॰विसेष्वर प्रसाद	साहित्य के तत्व और आयाम	नागपुरी संस्थान, राँची	1971
7	’गुप्त, गणपतिचन्द्र	साहित्यिक निबंध	लोकभारती प्रकाषन	2011
8	’गुप्त’ , गणपतिचन्द्र	भारतीय एवं पाष्चात्य काव्य सिद्धांत	लोकभारती प्रकाषन	2016
9	’तिवारी’ , डाॅ॰ रामचन्द्र	भारतीय एवं पाष्चात्य काव्यषास्त्र की रुपरेखा	लोकभारती प्रकाषन,	2016
10	’दास’ , डाॅ॰ श्याम संुदर	साहित्य लोचन	सस्ता साहित्य मंडल प्रकाषन	2018
11	’प्रमाणिक’ , शिवनाथ	खोरठा लोक-साहित्य	खोरठा साहित्य-संस्कृति परिषद, बोकारो	2004

12	’प्रसाद’ , डाॅ॰ दिनेश्वर	लोक-साहित्य और संस्कृति	जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद	2012
13	’बासंती’ , डाॅ॰ कुमारी	नागपुरी गीतों की छंद रचना	किषोर विद्या निकेतन, बी 2/236-ए, भदौनी, वाराणसी	1993
14	’मिश्र’ , डाॅ॰ भागीरथ	काव्यषास्त्र	विष्वविद्यालय प्रकाषन, वाराणसी	2010
15	’राय, गुलाब	काव्य के रुप	आत्माराम एण्ड संस, 1376 कश्मीरी गेट दिल्ली	2018
16	’षर्मा’ , देवेन्द्र नाथ	काव्य के तत्व	लोकभारती प्रकाषन, गोलधर वाराणसी	2015
17	’षुक्ल’ , आचार्य रामचन्द्र	हिन्दी साहित्य का इतिहास	लोक भारती प्रकाषन, पहली मंजिल दरबारी बिल्डंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद	2010
18	’साहु’ , डाॅ॰ त्रिवेणी नाथ	नागपुरी काव्य में प्रकृति चित्रण	किषोर विद्यानिकेतन बी-2/236- ए भदैनी, वाराणसी -	2008

पत्र-पत्रिकाएँ

1. पझरा - नागपुरी साहित्य संस्कृति मंच, राँची।
2. ’गोतिया- ठुमसा टोली, चुटिया, राँची।
3. ’सहिया’ - एम. जी. टावर 23, पूर्वी जेल रोड, राँची।
4. ’डहर’ - छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ।
5. ’संगोम’ - आई. टी. पब्लिकेषन कोकर, राँची।
6. शंखनांद - प्र. नागपुरिया सांस्कृतिक संघ, सिमडेगा।
7. राँची एक्सप्रेस - अपर बाजार, राँची।
8. आज - सामलौंग, राँची।
9. प्रभात खबर - कोकर, राँची।
10. हिन्दुस्तान - कोकर, राँची।
11. दैनिक जागरण - कोकर, राँची।
12. दैनिक भास्कर - रातू रोड, राँची।
13. सन्मार्ग - हरमू रोड, राँची।
14. आदिवासी - बिहार सरकार, राँची।
15. नागपुरी - वी/205 जगन्नाथपुर, राँची।